ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 256-258**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

बेरोजगारी की समस्या : कारण एवं निवारण

1. मंगल चन्द राय
2. प्रो0 (डॉ0) राम नरेश यादव

1. शोध अध्येता / सहायक आचार्य 2. प्रोफेसर, श्री मुरली मनोहर टाउन पी.जी. कॉलेज, बलिया (उ0प्र0) भारत

Received-21.03.2025, Revised-26.03.2025 Accepted-30.03.2025 **E-mail : mangalrai1980@gmail.com**

सारांशः ***प्रत्येक राष्ट्र एवं समाज के विकास का दायित्व उस समाज के युवाओं पर होता है। जिस समाज का युवा जितने अधिक मनोयोग से अपनी सम्पूर्ण मानसिक एवं शारीरिक ऊर्जा अपने समाज के विकास के लिए समर्पित करता है वह समाज उतनी तीव्र गति से विकास के मार्ग पर अग्रसर होता है।***

भारत जैसे विकासशील समाज में यह देखा जा रहा है कि युवा कई चुनौतियों का सामना कर रहा है। इसी में से एक प्रमुख चुनौती बेरोजगारी की समस्या है। इस समस्या के कारण भारत का युवा मानसिक रूप से समस्याग्रस्त है। बेरोजगारी के कारण यहाँ के युवा की पूर्ण ऊर्जा का लाभ समाज नहीं उठा पा रहा है और जो जनांकिकीय लाभ भारतीय समाज को मिलना चाहिए ,उससे वह वंचित रह जा रहा है।

राष्ट्रीय प्रतिदर्श संगठन, राष्ट्रीय सांख्यिकीय आयोग आदि संगठनों की रिपोर्ट से स्पष्ट हो रहा है कि भारत में बेरोजगारी, विशेष रूप से उच्च शिक्षित बेरोजगारी,गंभीर स्वरूप ग्रहण कर रही है जिससे भारतीय सामाजिक व्यवस्था में संरचनात्मक समस्याएं उत्पन्न हो रही है। यद्यपि इस संदर्भ में शासन द्वारा कई योजनाएं एवं कार्यक्रम प्रारंभ किए गए हैं परंतु उनका बहुत व्यावहारिक प्रभाव नही देखा जा रहा है। हमने शोध लेख में इस समस्या को समाजशास्त्रीय आधार पर स्पष्ट करते हुए इसके निवारण की चर्चा की है।

कुंजीभूत शब्द– युवा, सामाजिक समस्या ,बेरोजगारी ,समाज, मानव संसाधन ,शिक्षित, संरचनात्मक, समाजशास्त्रीय

किसी भी सभ्य समाज के लिए बेरोजगारी एक सामाजिक अभिशाप है। विकासशील समाजों में जहाँ प्रगति का प्रमुख आधार मानव संसाधन का अधिक से अधिक उपयोग होता है, वैसे समाजों में बेरोजगारी के कारण मानव संसाधनों का ठीक ढंग से उपयोग नहीं हो पाता, विशेषकर युवाओं का। जनसंख्या की अतिशय वृद्धि के कारण बेरोजगारी की समस्या दिन–प्रतिदिन गंभीर होती जा रही है। **आगबर्न एवं निमकाफ** ने इस समस्या को आधुनिक युग की एक गंभीर समस्या माना है, जो सामाजिक विघटन को बढ़ावा दे रहा है। विचारकों ने बेरोजगारी को व्यक्ति के साथ–साथ समाज के लिए समस्यामूलक माना है। यह समस्या समाज के पिछड़ेपन को भी स्पष्ट करती है। किसी भी लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था के लिए इस समस्या का बढ़ना उसके अस्तित्व के लिए बहुत घातक है क्योंकि इस समस्या से सीधे प्रभावित शिक्षित युवा होते हैं, जिनको संतुष्ट करना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता होती है।

CMIE की रिपोर्ट दिस्मबर 2024 के अनुसार भारत में बेरोजगारी दर 8.6 प्रतिशत थी। सांख्यिकीय मंत्रालय के जून 2025 के रिपोर्ट के अनुसार वर्तमान में भारत में बेरोजगारी की दर 5.6 प्रतिशत रही। ILO के अनुसार 2023–24 में भारत की शिक्षित युवा बेरोजगारी 10.2 प्रतिशत थी। ILO एवं मानव विकास संस्थान द्वारा जारी भारत रोजगार रिपोर्ट '2024 के अनुसार भारत में बेरोजगारी दर 8.3 प्रतिशत है तथा इसमें उच्च शिक्षा प्राप्त बेरोजगार युवाओं की संख्या लगभग 65.7 प्रतिशत है। इससे स्पष्ट है कि भारत में बेरोजगारी विशेषकर शिक्षित युवाओं मे बेरोजगारी की समस्या गंभीर रूप से विद्यमान है।

बेरोजगारी क्या है ?– बेरोजगारी से तात्पर्य किसी कार्यशील व्यक्ति की उस स्थिति से है, जिसमें उसके अंदर कार्य करने की इच्छा एवं सामर्थ्य होते हुए भी उचित भुगतान पर कार्य नहीं मिल पाता है।

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से बेरोजगारी को परिभाषित करते हुए कहा गया है "बेरोजगारी एक सामान्य, एक सामान्य कार्यबल के व्यक्ति (15–59वर्ष)को सामान्य कार्यकाल में सामान्य वेतन पर और उसकी इच्छा के विरुद्ध वैतनिक कार्य से अलग रखना है।"
बेरोजगारी को और अधिक स्पष्ट रूप से समझने के लिए हम कुछ परिभाषाओं पर ध्यान केंद्रित करेंगे –

प्रो. पीगू (1933) के अनुसार –"बेरोजगारी से तात्पर्य उस स्थिति से है,जब व्यक्ति को रोजगार प्राप्त करने की इच्छा हो ,परन्तु उसे रोजगार की प्रप्ति ना हो पा रही हैं ।"

जी. आर. मदान (2002) ने कहा है– "उस देश में बेकारी की स्थिति है जहाँ शारीरिक रूप से स्वस्थ व्यक्तियों को मजदूरी के सामान्य स्तर पर इच्छा होने पर भी काम उपलब्ध नहीं हो पाता है।"

बैंक ऑफ बड़ौदा (1973)के साप्ताहिक समीक्षा के अनुसार– "बेरोजगारी श्रमशक्ति की उपलब्धता तथा श्रम शक्ति के मांग के बीच का अंतर है।"

योजना आयोग ने उस व्यक्ति को बेरोजगार माना है जो एक सप्ताह में एक दिन बगैर काम के रहता है।

कुछ विचारकों ने बेरोजगारी को स्पष्ट करने के लिए कुछ प्रमुख तथ्यों की चर्चा की है जो निम्न है:

- व्यक्ति में कार्य करने की इच्छा शक्ति होनी चाहिए।
- व्यक्ति में शारीरिक एवं मानसिक योग्यता होनी चाहिए।
- रोजगार प्राप्त करने के लिए प्रयत्न भी किया जाना चाहिए।
- योग्यता अनुसार रोजगार मिलना चाहिए।

बेरोजगारी के स्वरूप– भिन्न–भिन्न देशों में बेरोजगारी के अलग–अलग स्वरूप देखने को मिलता है। विकासशील और अल्पविकसित देशों में बेरोजगारी का स्वरूप संरचनात्मक होने के कारण स्थायी एवं दीर्घकालिक होती है, जबकि विकसित देशों में मांग आधारित होने के कारण बेरोजगारी का स्वरूप अस्थायी और अल्पकालिक होती है।

मौसमी बेरोजगारी– यह बेरोजगारी कृषि एवं कृषि क्षेत्र से संबंधित व्यवसायों, बर्फ एवं चीनी उद्योग आदि व्यवसायों में देखा जाता है क्योंकि इन उद्योगों में कुछ समय के लिए रोजगार की उपलब्धता होती है और कुछ समय के बाद इसमें कार्यरत व्यक्ति बेरोजगार हो जाते हैं। आर.के.मूकर्जी एवं स्लेटर ने अपने अध्ययन में बेरोजगारी की इस स्वरूप की विस्तार से चर्चा की है।

छिपी बेरोजगारी– छिपी बेरोजगारी, बेरोजगारी का वह स्वरूप है जिसमें लोग रोजगार में तो रहते हैं परंतु उनका उत्पादकता नगण्य होती है अर्थात कहने का तात्पर्य है कि आवश्यकता से अधिक मानव कार्य में लगे होते हैं जबकि उनका उसमें

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

कोई योगदान नही होता है। इसे अदृश्य बेरोजगारी भी कहा गया है। इस प्रकार की बेरोजगारी सामान्यतः कृषि क्षेत्र में देखने को मिलती है।

चक्रीय बेरोजगारी– इस प्रकार की बेरोजगारी व्यवसाय के उतार –चढ़ाव पर निर्भर करती है। जब व्यवसाय में मांग बढ़ती है तो उत्पादन बढ़ाने के लिए कार्यबल की मांग बढ़ती है जिससे रोजगार बढ़ता है। इसके ठीक विपरीत जब मांग में कमी होती है तो उत्पादन भी घटता है जिसे कार्यबल में कमी आती है और रोजगार घटता है। यह अस्थाई प्रकृति की बेरोजगारी होती है।

अल्प बेरोजगारी– जब किसी व्यक्ति को उसकी योग्यता से कम कार्य और कम वेतन मिलता है तो यह स्थिति अल्प बेरोजगारी की होती है। जैसे – महाविद्यालय में प्रोफेसर की योग्यता रखने वाले को बेसिक शिक्षा में शिक्षक की नौकरी।

खुली बेरोजगारी– खुली बेरोजगारी, बेरोजगारी का वह स्वरूप है जिसमें व्यक्ति कार्य करने को तो तैयार रहते हैं और उनमें काम करने की योग्यता भी होती है परंतु काम न मिलने के कारण वे बेरोजगार रहते हैं।

संरचनात्मक बेरोजगारी– यह बेरोजगारी किसी देश के आर्थिक संरचना में व्यापक स्तर पर परिवर्तन होने से उत्पन्न होती है। 90 के दशक में भारत में L.P.G.- की नीति लागू करने के परिणामस्वरूप बड़े पैमाने पर आर्थिक व्यवस्था में संरचनात्मक परिवर्तन हुआ जिससे सरकारी निगमों और विभागों में बड़े पैमाने पर रोजगार की उपलब्धता कम हुई।

तकनीकी बेरोजगारी– यह बेरोजगारी व्यवसायों में तकनीकी परिवर्तन के परिणामस्वरूप उत्पन्न होती ळें वे व्यक्ति जो तकनीकी में होने वाले परिवर्तन से सामंजस्य नहीं स्थापित कर पाते वे अकुशल होकर बेकार हो जाते हैं। जैसे– कंप्यूटर से टाईपिंग आने पर टाइपराइटर से टाईपिंग करने वाले बेरोजगार हो गए।

शैक्षिक बेरोजगारी– बेरोजगारी का यह स्वरूप सबसे अधिक समस्याजनक है ,जिसमें शिक्षा ग्रहण करने के बाद भी युवा बेरोजगार रह जाते हैं। किसी भी देश के लिए अपने शिक्षित युवाओं को रोजगार ना दे पाना बहुत समस्याजनक होता है। कोठारी कमीशन ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली के कारण शैक्षिक बेरोजगारी की समस्या खड़ी हुई है क्योंकि भारतीय शिक्षा प्रणाली रोजगारोन्मुख नही हैं।

भारत में आज जो रोजगार की गंभीर समस्या खड़ी हो गयी है इसके पीछे बहुत से कारण है। यहाँ पर कुछ कारणों की चर्चा की गयी है–

जनसंख्या में अत्यधिक वृद्धि –भारत जैसे विकासशील देश में अत्यधिक जनसंख्या में वृद्धि सभी समस्याओं की जड़ है। भारत में युवाओं की संख्या में भी तेजी से वृद्धि हो रही है और सीमित संसाधनों के कारण उनके लिए रोजगार की व्यवस्था करवाना शासन व्यवस्था के लिए संभव नही हो पा रहा है। अत्यधिक जनसंख्या के कारण राष्ट्रीय आय का एक बड.ा भाग उपभोग में ही व्यय हो जा रहा है जिससे पूंजी की कमी के कारण उत्पादक क्षेत्रों में निवेश नही हो पा रहा है। ऐसे स्थिति में रोजगार सृजन की भी दर कमजोर हो गयी है जिससे बेरोजगारी तीव्र गति से बढ़ रही है।

दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली– बहुत से विचारकों ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को दोषपूर्ण माना है। शिक्षा प्रणाली पुस्तकीय ज्ञान पर अधिक आधारित होने के कारण शिक्षित युवाओं को रोजगार दिलाने में असफल रही है। शिक्षा में कौशल प्रशिक्षण में कमी के कारण शिक्षित युवा सरकारी नौकरी पाने की इच्छा पर ही निर्भर रह जाते हैं। दिन प्रतिदिन सरकारी नौकरी की संख्या कम होने के कारण बहुत से युवा बेरोजगार रह जाते हैं।

उच्च महत्वाकांक्षा– कई बार शिक्षित युवा अपनी ऊंची महत्वाकांक्षा के कारण भी बेरोजगार रह जाते हैं क्योंकि ऐसे युवक समझौतावादी प्रवृत्ति के नही होते हैं। इस प्रकार की उच्च महत्वाकांक्षा प्रशासनिक परीक्षाओं की तैयारी करने वाले युवाओं में देखी जाती है जो कई बार उनके भविष्य के लिए समस्या खड़ी करती है।

भौगोलिक गतिशीलता का अभाव– यह भी बेरोजगारी की समस्या का एक प्रमुख कारण है। बहुत से युवा आलसी प्रवृत्ति और घर के मोह–माया के कारण, घर से दूर जाकर रोजगार करना पसंद नहीं करते इस कारण से भी बहुत से युवा बेरोजगार रह जाते हैं।

भ्रष्टाचार– शासन व्यवस्था एवं परीक्षा के आयोजन में व्याप्त भ्रष्टाचार के कारण बहुत से योग्य शिक्षित युवक भी रोजगार पाने में असफल रह जाते हैं। समय–समय पर बेरोजगार युवक भ्रष्टाचार के खिलाफ धरना प्रदर्शन करते रहते हैं।

आर्थिक विकास की मंद गति– जब किसी देश में स्थानीय एवं वैश्विक परिस्थितियों के कारण आर्थिक विकास की गति मंद हो जाती है तो रोजगार सृजन भी कम हो जाता है और बेरोजगारी बढ़ जाती है।

व्यापार चक्र में आई हुई मंदी– व्यापार चक्र में मंदी के परिणामस्वरूप बेरोजगारी की समस्या खड़ी होती है। ऐसे स्थिति में कार्यरत लोगों का रोजगार तो जाता ही है साथ ही साथ नए रोजगार की उपलब्धता भी कम होती है।

ग्रामीण व कुटीर उद्योगों में कमी– उद्योगीकरण का सबसे बड़ा दुष्परिणाम यह होता है कि ग्रामीण और कुटीर उद्योग लगभग समाप्त हो गए हैं। हथकरघा ,दस्तकारी जैसे छोटे उद्योगों में कार्यरत लोग बेकार हो गए हैं। जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी की समस्या गंभीर हुई है और इसी कारण ग्रामीण पलायन में अत्यधिक वृद्धि हुई है।

उपर्युक्त कारणों की चर्चा से स्पष्ट है कि बेरोजगारी के लिए बहुत से कारण उत्तरदायी हैं।सरकार ने इस समस्या के समाधान के लिए समय–समय पर बहुत सी योजनाओं एवं कार्यक्रमों को लागू किया है। जैसे – पंडित दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना, ग्रामीण स्वरोजगार एवं प्रशिक्षण संस्थान, दीनदयाल अन्त्योदय योजना दृराष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, दीनदयाल अन्त्योदय योजना–(राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन), प्रधानमन्त्री रोजगार सृजन कार्यक्रम, प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, मेक इन इंडिया, मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना आदि कई योजनाओं का संचालन किया जा रहा है। यद्यपि सरकार के द्वारा उठाए गए कदम योजनागत रूप से तो बहुत सही हैं किन्तु इसका बहुत व्यावहारिक लाभ उतना नही दिख रहा है जितना होना चाहिए। साथ ही साथ यह भी देखा जा रहा है कि ग्रामीण शिक्षित बेरोजगार युवक इन योजनाओं का बहुत लाभ नही प्राप्त कर पा रहें हैं।

बेरोजगारी की समस्या के समाधान हेतु निम्न कदम उठाए जाने चाहिए –

- सर्वप्रथम शिक्षा प्रणाली को रोजगारपरक बनाने के लिए कौशल युक्त शिक्षा को बढ़ावा देना होगा।
- युवाओं को सरकारी नौकरी के प्रति लालसा छोड़कर अपना स्वयं के व्यवसाय प्रारंभ करने पर ध्यान देना होगा।
- शासन को अतिशय जनसंख्या के नियंत्रण हेतु प्रभावी कदम उठाना होगा।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

- ग्रामीण क्षेत्रों के कुटीर उद्योगों को आर्थिक सहायता देकर रोजगार सृजक बनाना होगा।
- ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार को बढ़ाने के लिए कृषि से संबंधित अन्य व्यवसाय जैसे पशुपालन, मधुमक्खी पालन, आचार निर्माण आदि को बढ़ावा देना होगा।

निष्कर्ष– उपर्युक्त चर्चा से यह स्पष्ट है कि वर्तमान समय में बेरोजगारी की समस्या, विशेष रूप से शिक्षित बेरोजगारी की समस्या गंभीर रूप लेती जा रही है और इस समस्या का कोई पूर्ण समाधान निकट भविष्य में नही दिख रहा है परंतु यह आशा किया जाना चाहिए कि सरकार के द्वारा उठाए जा रहे कदम एवं युवकों का सरकारी नौकरी के प्रति लालसा की कमी के परिणामस्वरूप इस समस्या का समाधान भविष्य में हो सकेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आहूजा, राम(2016), सामाजिक समस्याएं ,तृतीय संस्करण , रावत पब्लिकेशन,जयपुर।
2. पाण्डेय, तेजस्कर एवं संगीता पाण्डेय (2016), "भारत में सामाजिक समस्याएं" ,एम.सी .ग्रा हिल एडुकेशन (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड ,न्यू देहली ।
3. शर्मा,जी.एल.(2015), " सामाजिक मुद्दे" रावत पब्लिकेशन,जयपुर ।
4. सिंह,सत्येन्द्र (2019), भारतीय समाज में बढता युवा असन्तोष एक समाजशास्त्रीय अध्ययन , संकल्प प्रकाशन ,कानपुर।
5. Mishra ,A. Chaturvedi(1980), "Unemployment in Indian Society" Sage publication ,New Delhi .

*****